File No. 11014/7/2022-रा.भा.(प) (Computer No. 5092)
45831/2022/PATRIKA SECTION

M-11

पहाड़ों में प्लास्टिक : एक गंभीर चुनौती

डॉ0 राजेश कपूर
सहायक निदेशक (रा0 भा0)
ला0 ब0 शा0 रा0 प्र0 अकादमी, मसूरी

भूमिका: प्रकृति की अनमोल विरासत पहाड़ी इलाके हमारे देश का ही नहीं पूरे विश्व का गौरव हैं। इसकी गरिमा जितनी अधिक है, उतना ही अधिक यह विषय भी गंभीरता से विचार करने योग्य है कि उसे बचाए रखने के लिए हम किस कदर और कितने प्रयत्नशील हैं। इसका आधार है, पर्वतों के साथ हमारा लगाव, पहाड़ी इलाकों के प्रति हमारी संवेदनशीलता। प्रकृति की इस धरोहर के लिए वनों के कटाई, खनन, पहाड़ों का कटाव जैसे अनेक खतरे मौजूद रहते हैं। इसके अलावा, प्लास्टिक के रूप में एक बहुत बड़ा खतरा पहाड़ों के सामने विद्यमान है। यदि समय रहते इस दिशा में सतर्कता न बरती गई तो पूरी मानव–जाति को इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी, इसमें कोई शक नहीं होना चाहिए, इसलिए इस विषय पर विचार जरूरी है।

चुनौती के कारण: पहाड़ी इलाकों में श्रीनगर हो या पहलगाम, शिमला हो या कसौली, गंगटोक हो या शिलॉंग, मसूरी हो या नैनीताल, अल्मोड़ा हो या धर्मशाला, सतपुड़ा हो या माउंट आबू, ऊटी हो या मुन्नार सभी स्थल हमारी अत्यंत मूल्यवान विरासत में सम्मिलित हैं। यहां पर्यटकों की संख्या

भी बहुत अधिक रहती है। इन क्षेत्रों में पॉलीथीन के कैरीबैग, पैक की गई खाद्य वस्तुओं के रैपर, रोजमर्रा के इस्तेमाल की चीजों के पैकेट आदि का उपयोग भी उतना ही ज्यादा है। पर्यटन स्थलों पर पानी अपने साथ लेकर चलना पर्यटकों के लिए एक आम बात है और अनिवार्यता भी, इसलिए प्लास्टिक की बोतलों का इस्तेमाल यहां सबसे अधिक किया जाता है। यह ऐसा प्लास्टिक है जिसका केवल एक ही बार उपयोग होता है, उसके बाद इसे कचरे में फेंक दिया जाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो इस प्रकार का 'एकल उपयोग' अर्थात 'सिंगल यूज' प्लास्टिक सबसे अधिक प्रचलन में है। चूंकि इसे डिकम्पोज होने में 500 से 600 वर्ष का समय लगता है, इसलिए यह और भी घातक सिद्ध हो रहा है। इसमें केवल पर्यटकों को ही आरोपित करना उचित नहीं होगा, स्थानीय लोगों को भी क्लीन चिट नहीं दी जा सकती, वे भी प्रकृति के प्रति इस अन्यायपूर्ण कृत्य में बराबर के भागीदार हैं। एकल उपयोग के प्लास्टिक को इस्तेमाल करना उनकी भी आदत का एक हिस्सा बन चुका है। स्थानीय दुकानदार भी ग्राहकों की सुविधा के चलते पॉलीथीन के कैरीबैग्स रखते और उपलब्ध कराते दिखाई देते हैं। यहाँ प्लास्टिक के बहुत छोटे

Generated from eOffice by SUNITA AGNIHOTRI, ASO(PATRIKA) SA, ASSISTANT SECTION OFFICER, Department of Official Language on 09/11/2022 10:48 AM

हिस्सों यानी 'माइक्रो पार्टस' का उल्लेख भी बहुत जरूरी हो जाता है। ज्यादातर माइक्रो पार्टस् में बोतलों के ढक्कन, कैंडी या चॉकलेट के रैपर, शैंपू आदि के पाउच, सॉस या जैली के पैकेट, जूस के टैट्रापैक के साथ मिलने वाले स्ट्रॉ, इयर बड्स, नए कपड़ों के साथ लगे टैग जैसे छोटे आकार के प्लास्टिक के अवयव शामिल हैं। यह बात विचार करने योग्य है कि बड़े आकार में प्लास्टिक का कचरा तो रीसाइकलिंग में आसानी से जा सकता है किन्तु इतने छोटे प्लास्टिक के टुकड़ों को न तो इकट्ठा करना ही आसान है और न ही उसे रीसाइकलिंग के लिए भेजना ही संभव हो पाता है। श्रमिकों, टैक्सी ड्राइवरों आदि जैसे व्यक्तियों द्वारा पान मसाले, गुटखे आदि के पैकेट अक्सर पर्वतीय रास्तों में फेंके हुए दिखाई पड़ते हैं, जो इस जोखिम को और ज्यादा बढ़ाते हुए नजर आते हैं।

जोखिम के विभिन्न चरण: पहाड़ी इलाकों की यह खासियत है कि यहां समतल स्थान की उपलब्धता पर्याप्त मात्रा में नहीं होती। रास्तों में कहीं चढ़ाई है तो कहीं ढलान, पहाड़ों को काट कर बनाई गई सड़कें घुमावदार तो हैं ही, चौड़ी भी उतनी नहीं हो सकती जितनी समतल क्षेत्रों में संभव हो पाती हैं। भूभागीय सीमाओं के कारण सड़कों के किनारे या रास्तों के बीच फेंका गया प्लास्टिक का कचरा ज्यादा देर तक उसी जगह पर पड़ा नहीं रह पाता। थोड़ी–सी हवा चलने पर वह नीचे खाइयों में चला जाता है। इसके अलावा पहाड़ी इलाकों में बारिश भी बहुत अधिक होती है। बारिश के पानी में बहता हुआ कचरा तुरन्त खाइयों में जमा हो जाता है, जहाँ प्राकृतिक रूप से उगे हुए पेड़ों के इर्द–गिर्द इकट्ठा हो जाता है। एक पहाड़ी से दूसरी पहाड़ी के बीच दूर तक दिखाई देते पेड़ इन पहाड़ी इलाकों की वास्तविक वन–संपत्ति हैं। घाटियों में पेड़ों के आस–पास जमा होता यह प्लास्टिक कचरा सबसे ज्यादा घातक और विनाशकारी है। सर्वाधिक विनाशकारी इसलिए कि धीरे–धीरे पेड़ों के आधार में प्लास्टिक कचरे की एक तह बन जाती है जिसके कारण पेड़ों की जड़ों में पानी पहुंचना बंद हो जाता है और वे सूख जाते हैं तथा एक–एक करके गिरने शुरू हो जाते हैं। इस समस्या पर पूरी संजीदगी से विचार करना समय की मांग भी है और तात्कालिकता भी।

खतरनाक प्रभाव: यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि ऊंचाई पर स्थित होने के कारण इलाकों में ऑक्सीजन समतल क्षेत्रों की तुलना में काफी कम होती है। विशेष तौर पर रात के समय इन इलाकों में ऑक्सीजन की मात्रा में बहुत कमी आ जाती है। ऐसी स्थिति में प्लास्टिक कचरे से पेड़ों को पहुंचने वाला क्रमिक नुकसान गंभीर चिन्ता का एक विषय है। पेड़ों की संख्या में लगातार कमी से स्थानीय लोगों का जीवन खतरे में पड़ना तय है। इसके अलावा, यदि प्राकृतिक सौन्दर्य ही नहीं बचेगा तो पर्यटक भी इन क्षेत्रों की ओर आकर्षित नहीं होंगे और चूंकि यहां के लोगों के रोजगार का मुख्य स्रोत पर्यटन है, इसलिए स्थानीय लोगों के रोजगार पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता।

एक उल्लेखनीय तथ्य यह भी है कि अनेक पर्वतीय इलाके ऐसे हैं जहां पक्षियों की दुलर्भ प्रजातियां पाई जाती हैं। अलग–अलग तरह के, विविध आकार के तथा विभिन्न रंगों के पक्षी यहां के सौन्दर्य में तो वृद्धि करते ही हैं, साथ ही साथ ये क्षेत्र इन दुलर्भ प्रजातियों का महत्वपूर्ण आश्रय–स्थल भी हैं। पेड़ों को होने वाली क्षति के साथ–साथ पक्षियों की इन प्रजातियों को नुकसान पहुंचना स्वाभाविक है। इसके अलावा, यह समझना भी अति आवश्यक है कि तरह–तरह के प्लास्टिक का कचरा इकट्ठा होने से वातावरण में विषैले मिश्रण हो जाते हैं, पक्षियों के लिए यह बहुत अधिक घातक है, इस बात का बोध होना भी बहुत जरूरी है। यही नहीं, पहाड़ी इलाकों में पाए जाने वाले अन्य वन्य–जीवों पर भी यही बात लागू होती है। पर्यावरण को होने वाले नुकसान से वन्य–जीव भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते। खाने के चीजों के साथ–साथ प्लास्टिक के माइक्रो अवयव भी उनके

पेट में जाते हैं और उनके जीवन के लिए खतरा पैदा करते हैं। सौन्दर्य से परिपूर्ण पहाड़ी क्षेत्रों में अक्सर ऐसा देखने को मिल जाता है कि सुबह के समय सफाई कर्मचारी सड़क की

Generated from eOffice by SUNITA AGNIHOTRI, ASO(PATRIKA)-SA, ASSISTANT SECTION OFFICER, Department of Official Language on 09/11/2022 10:46 AM

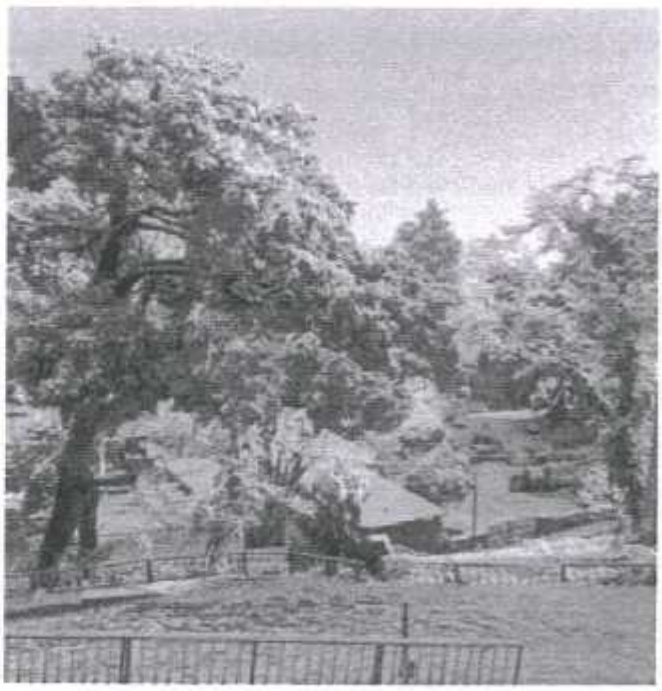

सफाई के बाद रास्ते पर गिरे पत्तों को इकट्ठा करके उनमें आग लगा देते हैं जिसमें सिंगल यूज प्लास्टिक की वस्तुएं भी शामिल होती हैं। कई जगहों पर स्थानीय लोगों द्वारा भी यही प्रक्रिया अपनाई जाती है। अज्ञानतावश हो या फिर सहूलियत के चलते ऐसा किया जा रहा हो, किन्तु इससे पैदा हुए जोखिम को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। प्लास्टिक जलने से हवा में अनेक विषैली गैसों का मिश्रित होना निश्चित है जो उस क्षेत्र में रहने वाले स्थानीय लोगों के लिए, वहां से गुजरने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए, आस–पास होटलों में ठहरे पर्यटकों के लिए, पक्षियों के लिए और वन्य–जीवों के लिए भी घातक है।

यह बात वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित है कि पर्वतों में झरनों से आने वाले पानी में खनिज पदार्थों की पर्याप्त मात्रा होती है, इसका अर्थ है यह कि यह पानी प्राकृतिक रूप से ही मिनरल होता है। स्थानीय निवासियों के लिए पानी का यही मुख्य स्रोत है, इसी पानी का संग्रहण किया जाता है और पीने के लिए तथा कार्यों के लिए इस्तेमाल में लाया जाता है। किन्तु दुखद बात यह है कि कई जगहों पर प्लास्टिक कचरे के साथ बहने से यह पानी विषैला हो जाता है। पानी में मिश्रित ये विषैले तत्व स्थानीय लोगों के जीवन के साथ–साथ यह पक्षियों और दूसरे वन्य–जीवों के जीवन के लिए भी गंभीर खतरा है।

सुझाव: इस गंभीर चुनौती से निपटने के लिए कुछ सुझाव हैं जिन पर विचार किया जाना बेहतर होगा। पहाड़ी इलाकों में प्लास्टिक के उपयोग और उसके कचरे से पैदा होते खतरे से कई स्तरों पर निपटने की आवश्यकता है। चूंकि सबसे ज्यादा खतरा सिंगल यूज प्लास्टिक का है, इसलिए सबसे पहले इसी ओर ध्यान दिया जाना चाहिए। पर्यटकों को इस प्रकार की वस्तुओं के उपयोग से परहेज करने के लिए जागरूक करने के साथ–साथ दुकानदारों और व्यवसायियों को भी इसके नुकसान और खतरे से आगाह करते हुए इसकी बिक्री न करने के लिए प्रतिबद्ध किया जाना जरूरी है। आवासीय क्षेत्रों में इस प्रकार के प्लास्टिक का कचरा फेंकने में स्थानीय लोगों की भूमिका स्पष्ट है, इसलिए उन्हें भी इस संबंध में शिक्षित करने के लिए अभियान चलाने के जरूरत है। सूखे पत्तों और प्लास्टिक कचरे को न जलाने के लिए भी सफाई कर्मचारियों एवं स्थानीय लोगों को जागरूक किया जाना अत्यन्त आवश्यक है। इस संबंध में स्थानीय नगर निकायों द्वारा गैर–सरकारी अथवा स्वयंसेवी संगठनों की मदद ली जा सकती है। इसके साथ ही नगर निगम निकायों द्वारा कचरे के निस्तारण के लिए निश्चित की गई व्यवस्था और निर्धारित किए गए नियमों को भी कड़ाई से लागू किया जाना जरूरी है। पर्वतीय इलाकों में एक समस्या यह भी है कि रास्तों पर दूर–दूर तक कूड़ेदान उपलब्ध नहीं है। इस समस्या से निपटने के लिए पूर्वोत्तर राज्यों के मॉडल को अपनाया जा सकता है। पूर्वोत्तर राज्यों में स्थानीय महिलाओं द्वारा घरों में बांस से छोटे–छोटे कूड़ेदान बनाए गए हैं। और पहाड़ी क्षेत्रों में थोड़ी–थोड़ी दूर पर सड़क के किनारे लगे पेड़ों के तनों या खंभों पर उन कूड़ेदानों को बांध दिया गया है। नगर निगम निकायों द्वारा उन कूड़ेदानों को नियमित रूप से खाली किया जाता है। स्वाभाविक है, सड़कों पर न तो कूड़ा फैलता है और न ही प्लास्टिक का कचरा हवा या बारिश से खाइयों में जाकर जमा होता है। क्षेत्रीय सीमाओं के मददेनजर यह उदाहरण अनुकरणीय एवं कारगर साबित हो सकता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा 2019 के स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर अपने भाषण में प्लास्टिक मुक्त भारत अभियान के लिए जो आह्वान किया गया है उसे पूरी संजीदगी के साथ सफल बनाए जाने की जरूरत है और पहाड़ी इलाकों में इस अभियान को गति प्रदान करना हमारा दायित्व भी है और हमारे राष्ट्र की पर्वतीय विरासत के प्रति नैतिक जिम्मेदारी भी है। ■

Generated from eOffice by SUNITA AGNIHOTRI, ASO(PATRIKA) SA, ASSISTANT SECTION OFFICER, Department of Official Language on 09/11/2022 10:48 AM